चौथी इकाई

रेडियो, मोबाइल, टीवी चहुँ ओर । झटपट जोड़ें दुनिया के छोर ।।

संचार माध्यम साधन हैं मात्र ।
बस इतना समझ लें छात्र ।।

❑ चित्रों में दिए गए वाक्यों पर चर्चा करवाएँ । इसी प्रकार के अन्य वाक्य सुनाएँ और कहलवाएँ । विद्यार्थियों को कौन-कौन से संचार के माध्यम पसंद हैं और क्यों, पूछें । दूरदर्शन, मोबाइल, इंटरनेट के अधिक उपयोग से होने वाले नुकसान पर चर्चा करें ।

● **श्रवण – सुनो और गाओ :**

२. प्यारा भारत देश हमारा

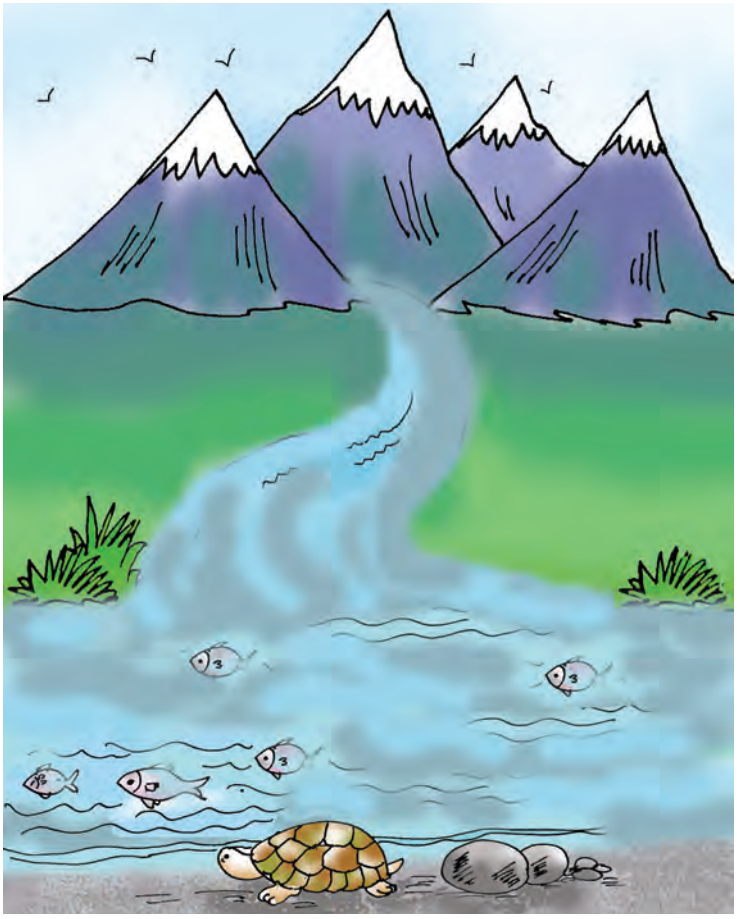

भारत देश हमारा,
प्यारा भारत देश हमारा ।

खेल रही हैं गोद में इसकी,
ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी,
गोदावरी, नर्मदा, सतलज,
ताप्ती, सिंधु लगाती फेरी ।

हिमगिरि चीर अनवरत बहती,
गंगा की पावन धारा ।

हैं अनेक जातियाँ, अनेकों,
धर्म मानते लोग यहाँ,
भाषा भिन्न और पहनावे,
विविध दीखते जहाँ-तहाँ

हम अनेक पर सदा गूँजता
यहाँ एकता का नारा ।

– सभाजीत मिश्र

❑ उचित हाव-भाव से कविता का पाठ करें और विद्यार्थियों से कई बार सस्वर पाठ करवाएँ । उचित लय-ताल में सामूहिक गुट, एकल में पाठ करवाएँ । उनसे छोटे-छोटे प्रश्न पूछें और उत्तर प्राप्त करें । देशभक्ति की अन्य कविताएँ पढ़ने के लिए कहें ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' के प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. देशभक्ति के गीत सुनो और सुनाओ ।

२. निम्नलिखित शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लगाओ :

मचान, यति, पथिक, बालक, फाटक, भोर, हलधर, शोध, षडयंत्र, समीर, वरदान, लघु ।

३. किसी साहित्यकार की जीवनी पढ़ो ।

४. उत्तर लिखो :

(क) हमारा भारत देश कैसा है ?

(ख) भारत की गोदी में कौन-कौन-सी नदियाँ हैं ?

(ग) अनवरत कौन बहती है ?

(घ) भारत में क्या-क्या भिन्नताएँ दीखती हैं ?

(ङ) एकता का नारा कहाँ गूँजता है ?

४GLH8R

५. चित्र देखकर त्योहारों एवं उत्सवों के नाम बताओ :

६. मेले में किसी को जेब काटते हुए देखकर तुम क्या करोगे ?

• वाचन – पढ़ो और बोलो :

३. तीन मूर्तियाँ

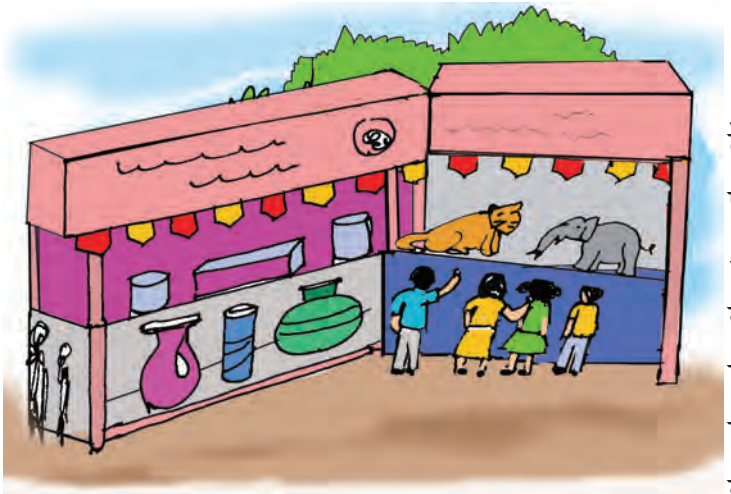

शहर में विशाल मेला लगा था । मेला देखने के लिए बच्चों की भीड़ उमड़ पड़ी थी । मेले में अलग-अलग मंडप और झाँकियाँ थीं । एक मंडप में विभिन्न कलाकारों की सजी मूर्तियाँ थीं । एक-से-एक खूबसूरत मूर्तियों को देखकर बच्चे खुश हो रहे थे । मंडप की तीन मूर्तियों पर सब की आँखें गड़ी हुईं थीं । ये तीन मूर्तियाँ एक जैसी थीं पर हर एक के गले में लटके कागज पर कीमत अलग-अलग लिखी हुई थी ।

बच्चों ने मूर्तिकार से पूछा, "मूर्तियाँ जब एक जैसी हैं तो कीमत में अंतर क्यों ?" कलाकार ने बच्चों के सवाल का जवाब देने के लिए बाँस की पतली और बड़ी-सी सलाई ली और पहली मूर्ति के कान में डाली । यह सलाई मूर्ति के दूसरे कान से बाहर निकल गई । दूसरी मूर्ति के कान में भी सलाई डाली, वह उसके मुँह से निकल गई । तीसरी के कान में सलाई डाली, वह अंदर ही रह गई ।

कलाकार ने अब बताया कि तीनों मूर्तियाँ भले ही एक जैसी दीखती हैं, लेकिन सलाई डालते ही तीनों के अंतर का पता चल जाता है । जिस मूर्ति के कान में डाली गई सलाई दूसरे कान से निकल गई उसकी कीमत पचास रुपये इसलिए है क्योंकि यह कुछ भी ग्रहण नहीं करती है । दूसरी की कीमत पाँच सौ रुपये इसलिए है कि यह सुनकर कुछ ग्रहण करती है । तीसरी की कीमत पाँच हजार रुपये इसलिए है क्योंकि यह सुना हुआ पूरा ग्रहण करती है ।

कलाकार ने फिर कहा, "इसी तरह आदमी भी तीन तरह के होते हैं । जो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है; वह कभी समझदार नहीं हो सकता । जो एक कान से सुनकर मुँह से निकाल देता है; वह थोड़ा समझदार होता है । जो एक कान से सुनकर मन में धारण कर लेता है; वह पूरा समझदार होता है ।"

❑ कहानी का मुखर वाचन कराएँ । विद्यार्थियों से उनके शब्दों में कहानी कहलवाएँ । उन्हें प्रत्येक कार्य समझदारी से करने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थियों को अच्छी आदतों की जानकारी दें । इस तरह की अन्य नीतिपरक कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. देशभक्तिपरक कोई एक कहानी सुनाओ ।

२. उत्तर दो :

(क) बच्चों की भीड़ क्यों उमड़ पड़ी थी?

(ख) मंडप में क्या सजी थीं ?

(ग) तीनों मूर्तियों के अंतर का पता कैसे चला ?

(घ) तीसरी मूर्ति की कीमत पाँच हजार रुपये क्यों थी ?

(ङ) पूरा समझदार कौन होता है ?

३. 'नदी की आत्मकथा' पढ़ो ।

४. रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(च) शहर में ..... था ।

(छ) मंडप की तीन ..... गड़ी हुईं थीं ।

(ज) कलाकार ने बच्चों के सवाल का जवाब देने के लिए बाँस की ..... ली ।

(झ) वह कभी ..... नहीं हो सकता ।

(ञ) जो एक कान से सुनकर ..... थोड़ा समझदार होता है ।

५. चित्र देखकर खेल का नाम बताओ :

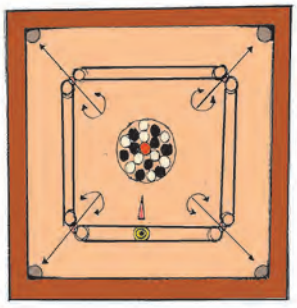

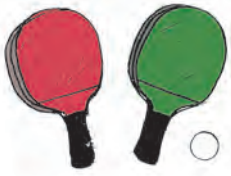

६. तुम कुछ खा रहे हो और कोई बच्चा ललचाई दृष्टि से तुम्हारी ओर देख रहा है तो तुम्हारे मन में कौन–से भाव उत्पन्न होंगे, बताओ ।

● वाचन – पढ़ो, समझो और लिखो :

४. बचत

(लक्ष्मण पढ़ रहा है । मुखौटा लगाए पात्र एक-एक कर मंच पर प्रवेश करते हैं ।)

बिजली – मैं बिजली हूँ; बिजली ! तुम लोग मेरा बहुत दुरुपयोग करते हो ।

पानी – और मैं हूँ पानी, सबसे अधिक व्यर्थ मुझे ही समझा जाता है । घर हो या बाहर, जहाँ देखो वहीं; तुम नल खुला छोड़ देते हो । इसलिए हम हड़ताल पर जा रहे हैं ।

लक्ष्मण – तुम हड़ताल पर मत जाओ वरना हम असहाय हो जाएँगे ।

पानी – अब बूँद-बूँद पानी के लिए तरसो ।

गैस – मैं रसोई गैस हूँ । बिजली-पानी की तरह लोग मेरा भी बहुत दुरुपयोग करते हैं ।

लक्ष्मण – तो क्या तुमने भी हड़ताल कर रखी है ?

गैस – हाँ ! अब तुम अपने-आप को कोसते रहो ।

पेट्रोल – और मैं पेट्रोल हूँ; पेट्रोल ! तुम लोग जिस तरह से मेरा अपव्यय कर रहे हो, उससे तो मैं हमेशा के लिए समाप्त हो जाऊँगा ।

लक्ष्मण – हमको तुम सबकी आवश्यकता है ।

पेट्रोल – बिजली, पानी, गैस और मेरी, हम सभी की बस एक ही शर्त है कि लोगों को हमारा अपव्यय रोकना होगा । अच्छे भविष्य के लिए हमारी बचत अनिवार्य है ।

लक्ष्मण – मनुष्य को यह शर्त स्वीकार है ।

बिजली, पानी, गैस – तो समझो कि हमारी हड़ताल भी खत्म !

❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । मौन वाचन हेतु प्रेरित करें । उपरोक्त संवाद का विद्यार्थियों से नाट्यीकरण कराएँ । जीवनावश्यक वस्तुओं पर चर्चा करते हुए उनका महत्त्व समझाएँ ।

स्वाध्याय

१. किसी देखे/सुने हुए बाल नाटक का अंश सुनाओ ।

२. बरसात के पहले दिन का अनुभव बताओ ।

३. किसी वैज्ञानिक का संस्मरण पढ़ो ।

४. उत्तर लिखो :

(क) मुखौटा लगाकर कौन प्रवेश करते हैं ?

(ख) सबसे अधिक व्यर्थ किसको समझा जाता है ?

(ग) लोग किस-किसका दुरुपयोग करते हैं ?

(घ) पेट्रोल ने पहली बार क्या कहा ?

(ङ) सभी ने कौन-सी शर्त रखी ?

५. चित्र देखकर तिलहनों के नाम बताओ :

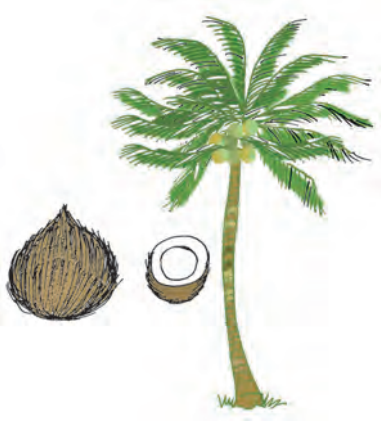

६. तुम्हारी जानकारी में मिलावट किन-किन वस्तुओं में होती है, इससे बचने के लिए तुम कौन-कौन-सी सावधानी रखोगे, बताओ ।

● पंचमाक्षर – सुलेखन करो :

५. कठपुतली

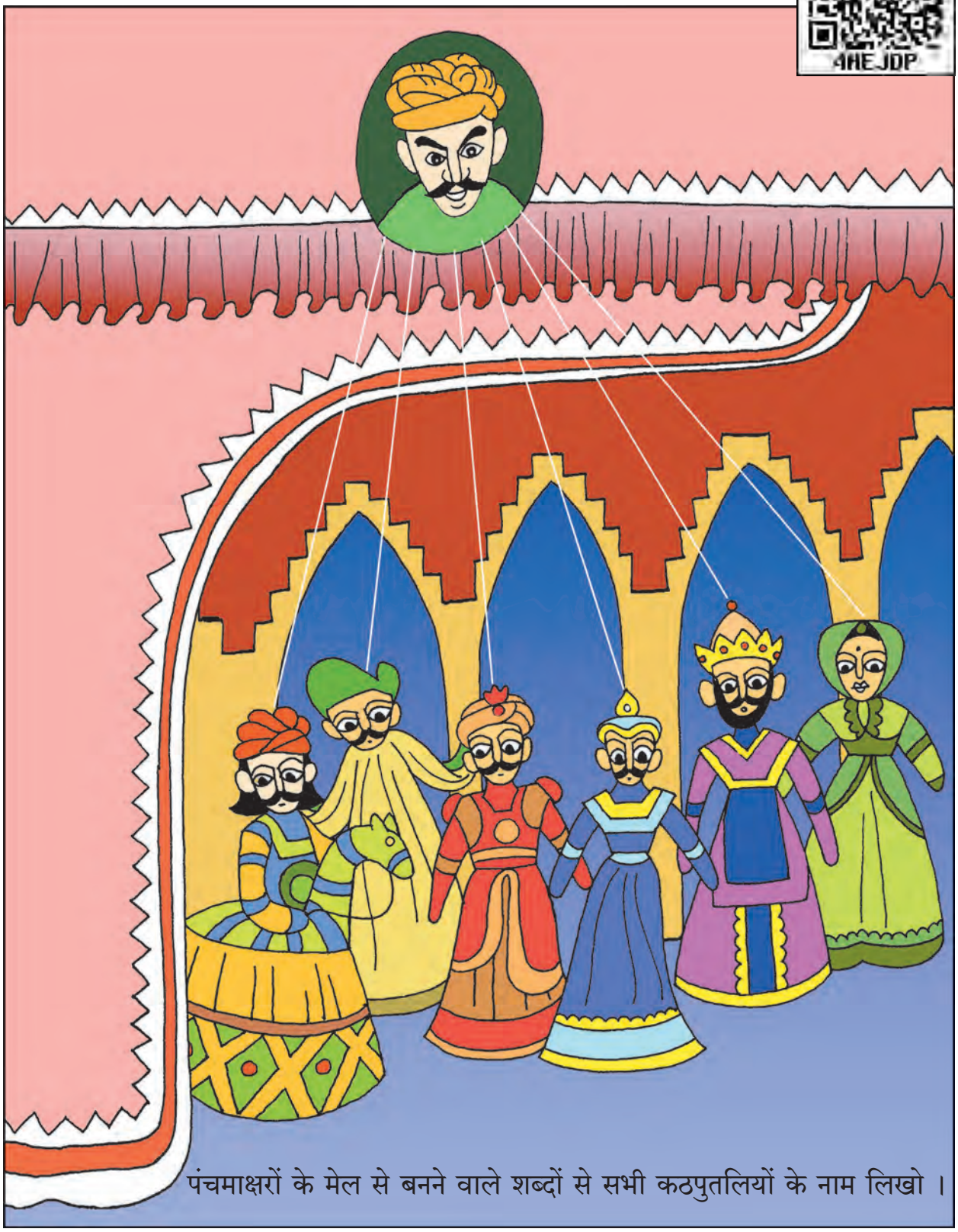

पंचमाक्षरों के मेल से बनने वाले शब्दों से सभी कठपुतलियों के नाम लिखो ।

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रवाचन कराएँ । 'क' वर्ग और 'च' वर्ग आदि प्रत्येक वर्ग के अंत में आने वाले पंचमाक्षर और उनके अन्य चार वर्णों पर चर्चा कराएँ । ङ, ञ, ण, न, म से बनने वाले पंचमाक्षरयुक्त शब्द बताने के लिए कहें । उनका सुलेखन/श्रुतलेखन कराएँ ।

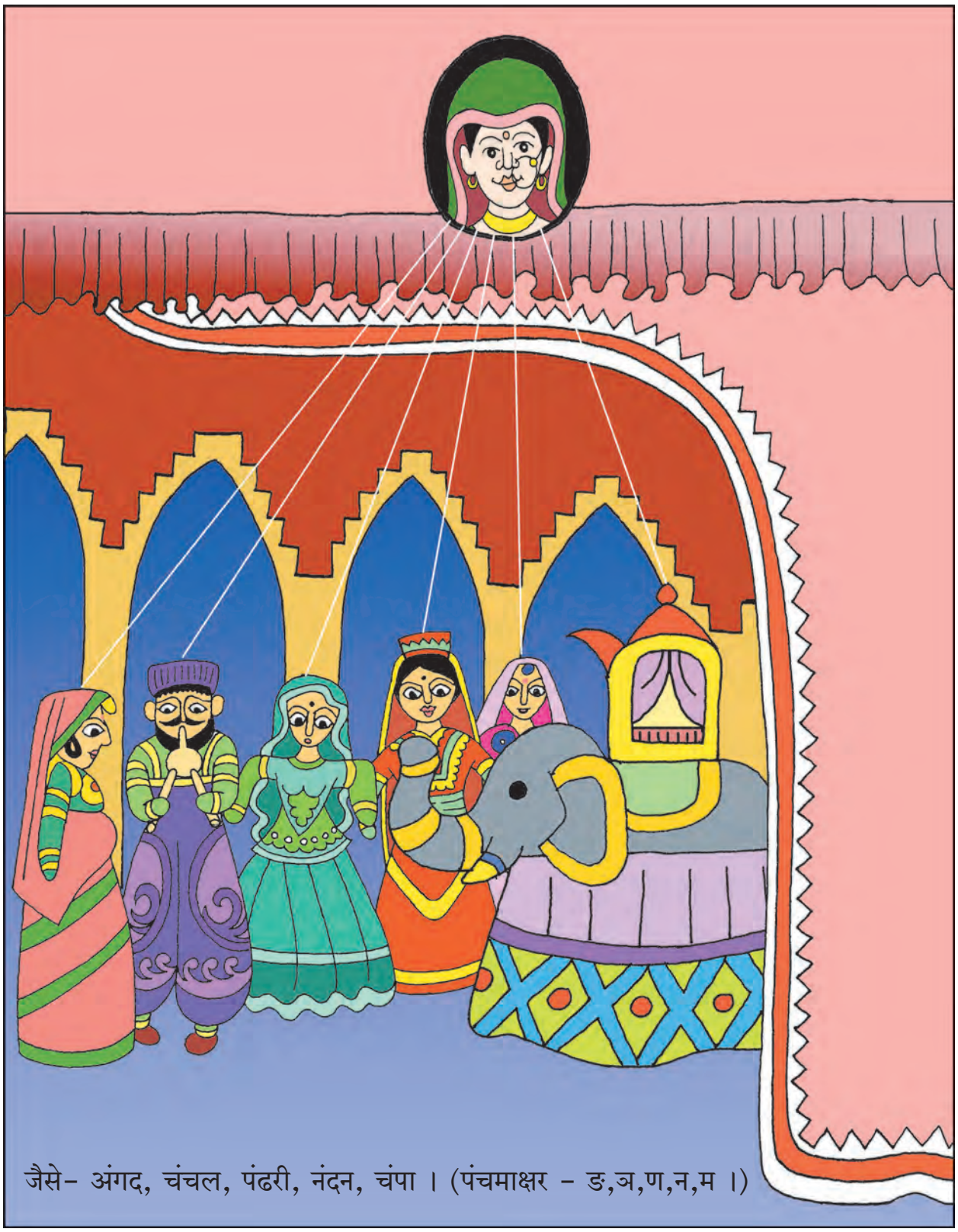

❑ क,च,ट,त,प, वर्ग के पंचमाक्षर ङ,ञ,ण,न,म हैं । ये अपने ही वर्ग के शेष चार वर्णों में से किसी भी वर्ण से मिले तो अनुस्वार उसके पहले वाले वर्ण पर लगता है । उदा.- शंख (शङ्ख), 'क' वर्ग का पंचमाक्षर 'ङ' वर्ण 'ख' से मिला है । अतः अनुस्वार पहले वर्ण 'श' पर लगा है । पंचमाक्षरयुक्त शब्दों का सामूहिक अनुकरण एवं मुखर वाचन करवाएँ । प्रत्येक विद्यार्थी को मौन वाचन करने का अवसर दें । उनसे पंचमाक्षर के प्रयोग पर चर्चा करें एवं समझाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए हुए पंचमाक्षरयुक्त शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें और उनका लेखन करवाएँ ।

• भाषा प्रयोग – पढ़ो, समझो और लिखो :

६. आदमी और मशीन

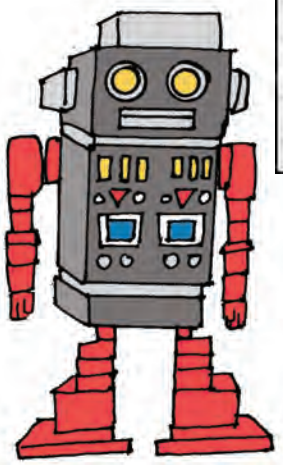

डॉ. स्वराली ने बाहर जाते समय अपनी बेटी शैली को सावधान किया कि वह रोबोट के साथ किसी तरह की छेड़छाड़ नहीं करेगी । बेटी तो ऐसे मौके की ताक में ही थी । उसके पास कई तरह के खिलौने थे । चाभीवाली कार, दूरबीन, कंप्यूटर गेम, साँप-सीढ़ी जैसे विभिन्न खिलौनों से खेल-खेलकर वह ऊब चुकी थी । उसने सोचा कि वह कोई नया खेल खेलेगी । माँ के सावधान करने के बावजूद उसने रिमोट हाथ में लेकर रोबोट को आदेश देना शुरू कर दिया । शैली की आज्ञा के अनुसार रोबोट ने बैठक की तिपाई को उठाकर बगीचे में रख दिया । दूसरी बार आज्ञा देने पर रोबोट

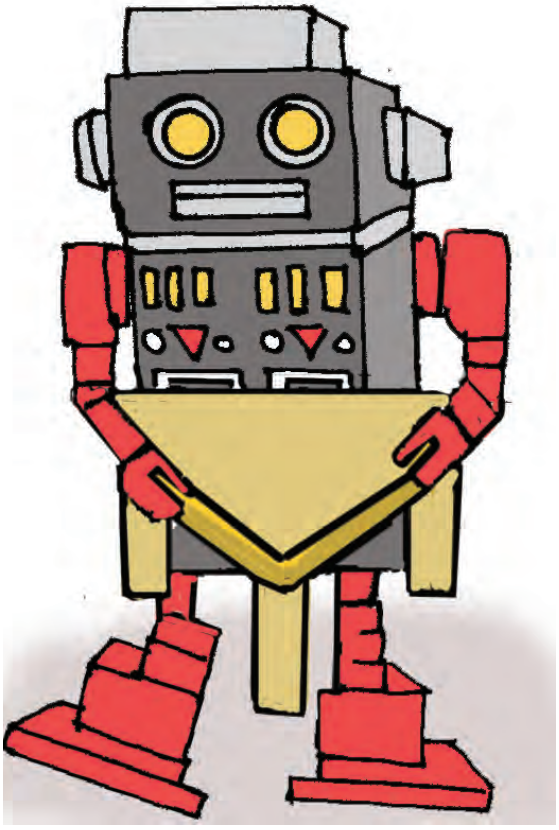

❑ पाठ का मुखर, मौन वाचन कराएँ । विद्यार्थियों से उनके प्रिय खिलौनों के बारे में पूछें । तीन प्रमुख 'काल' पर चर्चा करें । पाठ में आए भूत, वर्तमान, भविष्य काल के वाक्यों को लिखवाएँ । पाठ्यपुस्तक में से तीनों काल के दस-दस वाक्यों का संकलन कराएँ ।

ने फलों की डलिया रसोईघर से उठाकर बैठक में रख दी । शैली फूलकर कुप्पा हो गई । उसे लगा; जादू की छड़ी उसके हाथ आ गई है । वह रोबोट से मनचाहा काम करवा सकती है। अब उसने सोचा कि आदेश देकर रोबोट से अपना बस्ता मँगवा लेगी और फल खाते हुए अपना गृहकार्य करेगी । आदेश के अनुसार रोबोट बस्ता ले आया ।

अब वह जोश में आकर कुछ अद्‌भुत करतब करवाने की सोचने लगी । रिमोट उसके हाथ में था । वह रिमोट को उलट-पलटकर देखने लगी । अचानक रोबोट उठा और शैली की तरफ बढ़ा । इससे पहले कि वह कुछ समझ पाती रोबोट शैली को उठाकर घर के बाहर बगीचे में रख आया । शैली भौचक रह गई । उसे याद आया कि उसने रिमोट अपनी ओर घुमाया था तभी गलती से कोई बटन दब गया होगा । उसी का नतीजा उसे भुगतना पड़ रहा है ।

अब उसकी समझ में आ गया कि हर काम सोच-विचार कर करना चाहिए । आदमी और मशीन में यही अंतर है । मनुष्य किए जाने वाले काम के हर चरण पर विचार कर सकता है । मशीन के पास विचार की शक्ति नहीं होती, इसलिए वह दिया गया आदेश भर पूरा करती है ।

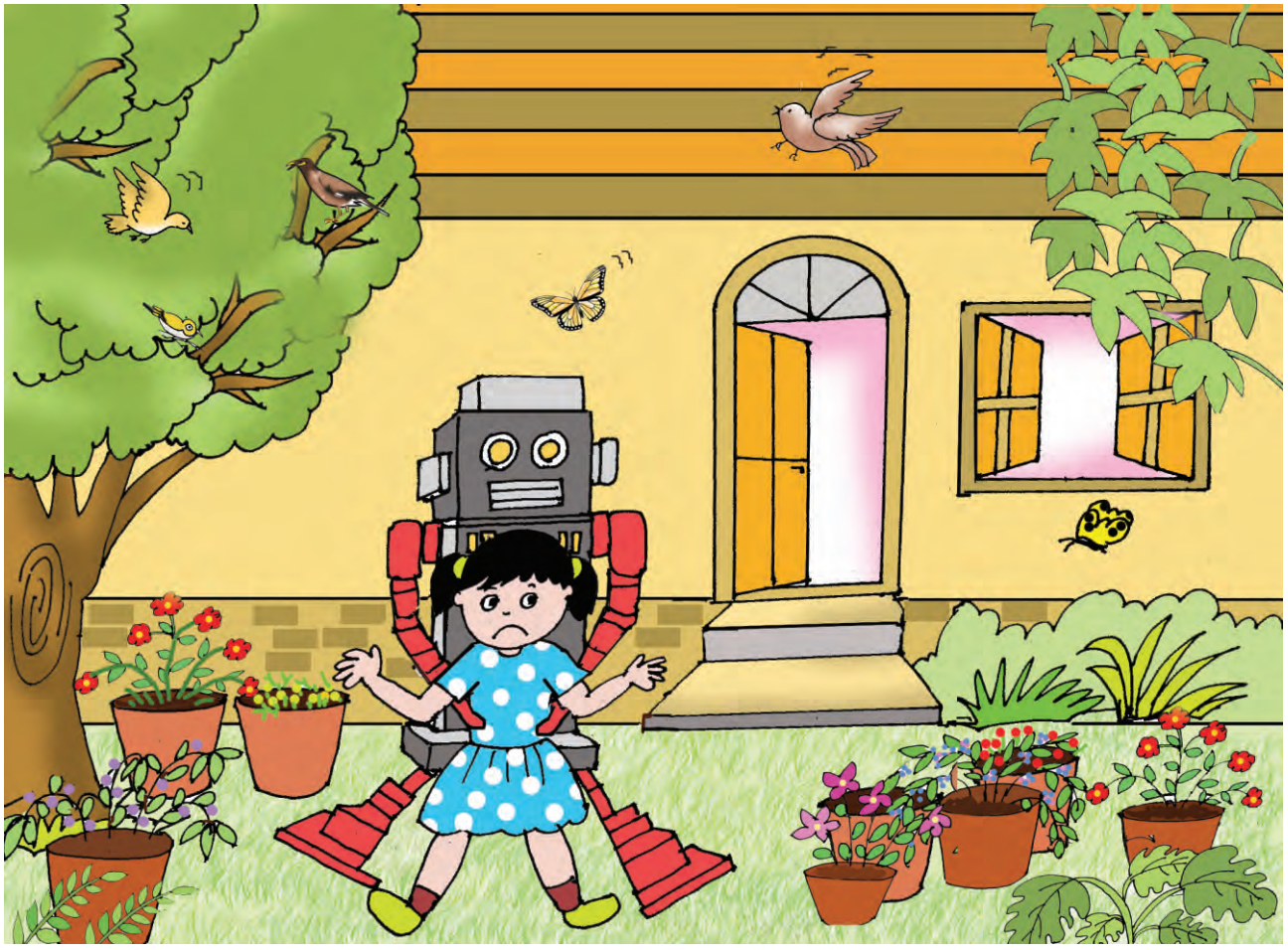

❑ विद्‌यार्थियों से प्रमुख तीन कालों के दो-दो वाक्य बोलने और लिखने के लिए कहें । कुछ वाक्यों का काल परिवर्तन कराके लिखने हेतु सूचना दें । विद्‌यार्थियों को विभिन्न 'स्वयंचलित यंत्रों' के उचित उपयोग करने हेतु आवश्यक सूचना दें ।

● आकलन – समझो और बताओ :

७. बूझो तो जानें !

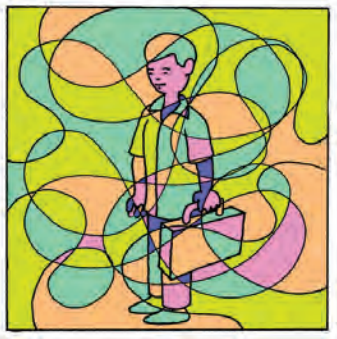

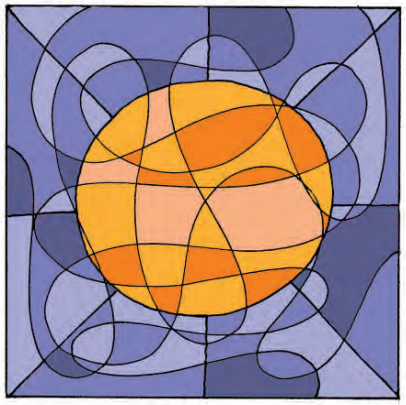

तीन अक्षर का उसका नाम,
आता है खाने के काम ।
अंत कटे हल बन जाए,
मध्य कटे तो हवा कहलाए ।

आपस में ये मित्र बड़े,
चार पड़े हैं चार खड़े ।
इच्छा हो तो उसपर बैठो,
या हैं मजे से सोए पड़े ।

अंत कटे कौआ बन जाए,
प्रथम कटे दूरी का माप ।
मध्य कटे तो कार्य बने,
तीन अक्षर का उसका नाम ।

अपनों के ही घर यह जाए,
तीन अक्षर का नाम बताए ।
शुरू के दो अति हो जाए,
अंतिम दो से तिथि बताए ।

बिना तेल के जलता है,
पैर बिना वह चलता है ।
उजियाला बिखेरता रहता,
अँधियारे को दूर करता है ।

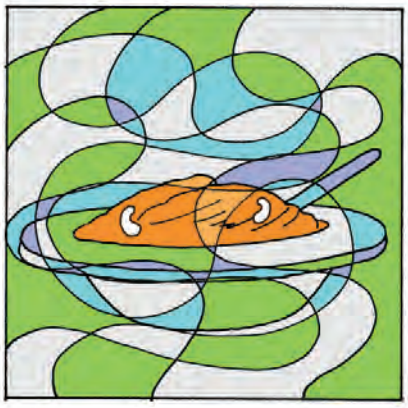

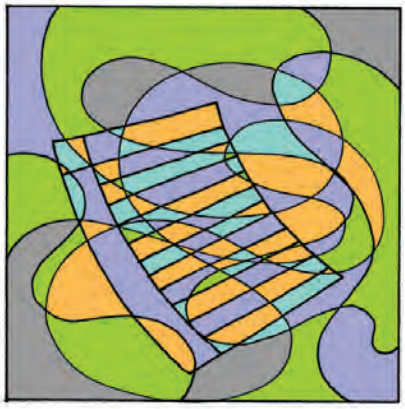

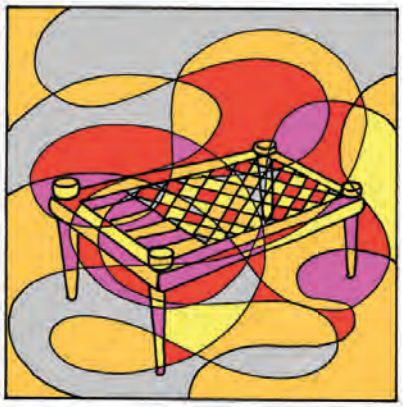

❑ पहेलियों का मुखर और मौन वाचन कराएँ । पाठ की पहेलियाँ बूझने के लिए कहें । प्रत्येक पहेली बूझकर उसका हल चौखट में लिखने के लिए कहें । कक्षा में अन्य पहेलियाँ सुनाएँ और उन्हें बूझने के लिए कहें । विद्यार्थियों से पहेलियों का संग्रह कराएँ ।

● परिसर अभ्यास – पढ़ो, समझो और कृति करो :

८. ज्ञान-विज्ञान

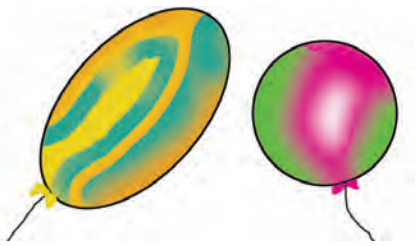

क्या तुम्हें हवा दिखाई देती है ? नहीं न ! सत्य तो यह है कि हवा भूमंडल के हर स्थान पर उपलब्ध है । वह दिखाई नहीं देती पर वायुमंडल की अधिकांश जगह वही घेरती है । विश्वास नहीं होता न ! आओ, एक प्रयोग द्‌वारा इसे समझने का प्रयास करें ।

एक गुब्बारा लो । इसे मुँह से फुलाओ । तुम देखोगे कि गुब्बारे का आकार बढ़ गया है ।

विचार करो- गुब्बारा क्यों फूला, उसका आकार क्यों बढ़ा ? गुब्बारे के फूलने से स्पष्ट होता है कि हवा उसमें भर गई है । इसका अर्थ है कि हवा जगह घेरती है ।

अब गुब्बारे का मुँह खोल दो या गाँठ लगाई है तो उसमें आलपिन चुभाओ । इससे हवा बाहर निकल जाएगी और गुब्बारा फिर से पिचक जाएगा । इसी प्रकार साइकिल की ट्‌यूब में हवा भरने पर वह फूल जाती है । स्कूटर, मोटरसाइकिल, कार, ट्रक, बस आदि के पहिये भी हवा के दम पर ही चलते हैं । याद रखो; विज्ञान उसी बात को मान्य करता है जिसे प्रयोग द्‌वारा सिद्‌ध किया जा सके ।

❑ पाठ का मुखर और मौन वाचन कराएँ । हवा कहाँ-कहाँ है, प्रश्न पूछें, चर्चा करें । दिए गए चित्रों का वाचन कराएँ । उनपर प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें । उदाहरण देते हुए चर्चा करें और विद्‌यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करें ।

● पत्र – पढ़ो, समझो और बताओ :

९. पृथ्वी

‘धरती’, वसुंधरा नगर,
पो. अवनि, जि. ग्रहांचल,
सौरमंडल राज्य १११ १११
दि. २२ अप्रैल २०१४

प्रिय बेटे मानव,

आशीर्वाद । तुम्हारी कुशलता की कामना करती हूँ ।

मेरा जन्म कब और किन परिस्थितियों में हुआ होगा; यह जानने की इच्छा सभी को है । वैज्ञानिकों ने विभिन्न अनुसंधानों द्‌वारा यह पता लगाया कि मेरा जन्म आज से लगभग पाँच खरब वर्ष पूर्व हुआ होगा । वैज्ञानिकों की संकल्पना के अनुसार मेरा प्रारंभ एक दहकते हुए अग्निपिंड के रूप में रहा होगा । मेरा आकार कुछ लंबोतरा है । मैं ध्रुवों पर चपटी और विषुवतरेखा पर उभरी हुई हूँ । मैं बहुत तेज गति से सूर्य के चारों ओर घूमती हूँ । इस गति को ‘परिक्रमण’ कहते हैं । परिक्रमण के फलस्वरूप विभिन्न ऋतुएँ होती हैं । मेरी एक गति और भी है । उसे ‘परिभ्रमण’ कहा जाता है । इसमें मैं अपनी धुरी पर घूमती हूँ । परिभ्रमण के कारण ही दिन और रात होते हैं ।

वस्तुतः मैं एक ऐसा अनोखा ग्रह हूँ जिसके अधिकाधिक भाग में जल-ही-जल है । मेरे चारों ओर वायुमंडल है । मेरा तापमान मानव जीवन के लिए अनुकूल एवं पोषक है । मैं हरे-भरे मैदान, विशाल सागर, निरंतर कल-कल करती हुई बहने वाली नदियाँ, बर्फीले पहाड़ और जैव विविधता से भरी हुई हूँ । तुम मेरे सबसे अच्छे बुद्‌धिमान पुत्र हो । लेकिन आज तुम्हारे बढ़ते उपभोक्तावाद, विकास की अंधाधुंध दौड़, अनियंत्रित होते कूड़े-कचरे के अलावा बढ़ते प्रदूषण आदि कारणों से मेरे लिए साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है । इसलिए तुम्हें प्रयत्नशील रहना चाहिए कि मैं जीवन के हजारों रंगों के लिए सदा हँसती और खिलखिलाती रहूँ । आखिर मैं रहूँगी तभी तो तुम्हारी साँस चलती रहेगी न !

तुम्हारी माँ

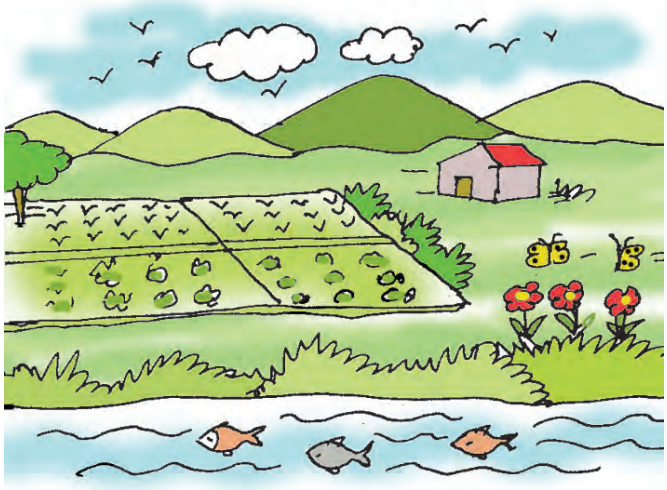

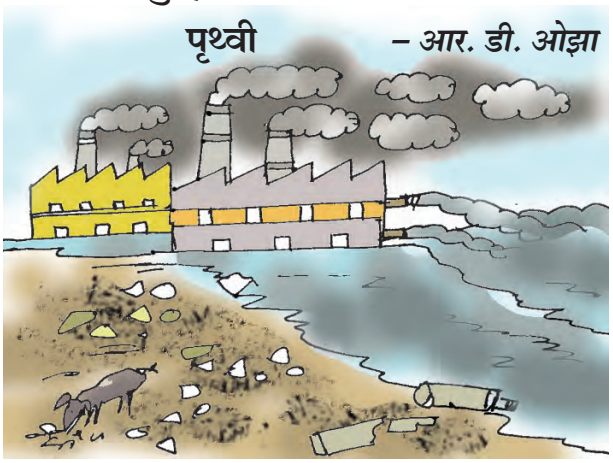

❑ विद्‌यार्थियों से पत्र का मुखर वाचन कराएँ । पत्र का प्रारूप समझाएँ । पृथ्वी की उपयोगिता, दिन-रात, ऋतुओं पर चर्चा करें । अपने मित्रों/ सहेलियों, आदरणीयों को पत्रलेखन हेतु विद्‌यार्थियों को प्रोत्साहित करें । अन्य किसी पत्र का वाचन करवाएँ ।

स्वाध्याय

१. रेगिस्तान के बारे में सुनो ।

२. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर बताओ :

परिस्थितियों, वैज्ञानिकों, पिंड, नारंगी, गोला, ध्रुवों, रेखा, विविधता, नदी, कूड़े-कचरे, आँखें, बेटे ।

३. उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्यों को पढ़ो :

इकाई बोली दहाई से सैकड़ा से लड़ोगे सैकड़ा ने पूछा बिन मौत मरोगे हजार को देख सामने सैकड़ा का दम फूल गया लाख से सामना होते ही हजार को साँप सूँघ गया करोड़ आता दीखा तो लाख भाग खड़ा हुआ अरब के सामने करोड़ चारों खाने चित हुआ खरब के आने से हाहाकार मच गया और अरब बर्फ-सा जम गया

४. उत्तर लिखो :

(क) पृथ्वी के जन्म के बारे में किसने और कैसे पता लगाया ?

(ख) पृथ्वी का प्रारंभ किस तरह का रहा होगा ?

(ग) परिक्रमण और परिभ्रमण किसे कहते हैं ?

(घ) पत्र में ऊपर दाहिनी तरफ, बाईं तरफ और सबसे नीचे दाईं ओर क्या-क्या लिखा जाता है ?

(ङ) पृथ्वी को साँस लेना क्यों मुश्किल हो रहा है ?

५. चित्र देखकर नाम बताओ :

६. तुम अक्षम/वृद्ध व्यक्तियों की सहायता निम्न में से किस प्रकार कर सकते हो, बताओ :

(च) बस और रेल में बैठने की जगह देकर ।

(छ) रास्ता पार करने में ।

(ज) सामान लाने/उठाने में ।

(झ) हाथ पकड़कर उठने-बैठने में ।

(ञ) समयानुसार भोजन/पानी पूछकर ।

● चित्रवाचन – देखो, समझो और पढ़ो :

पहली पीढ़ी

१०. छोटा परिवार

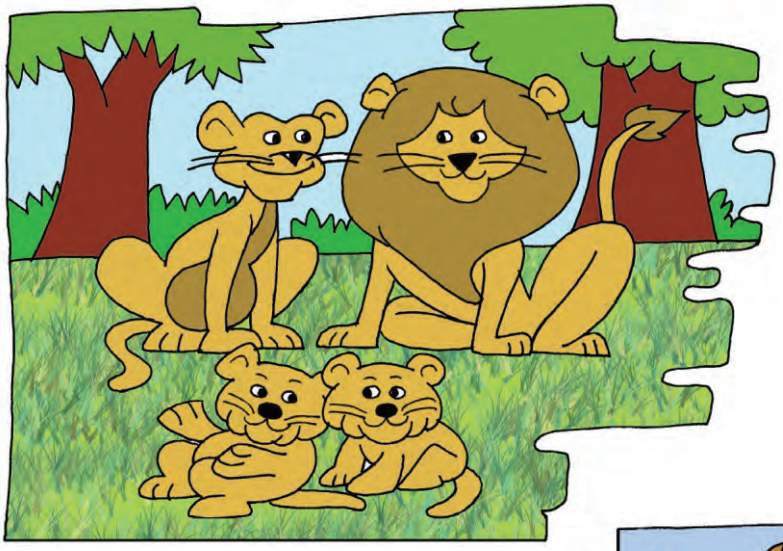

१. एक सुनसान जंगल था । उसमें सिंह और सिंहनी रहते थे । उनके परिवार में दो नन्हे-मुन्ने शावक खेल रहे थे । वे बहुत खुश थे । घर में खुशहाली छाई थी ।

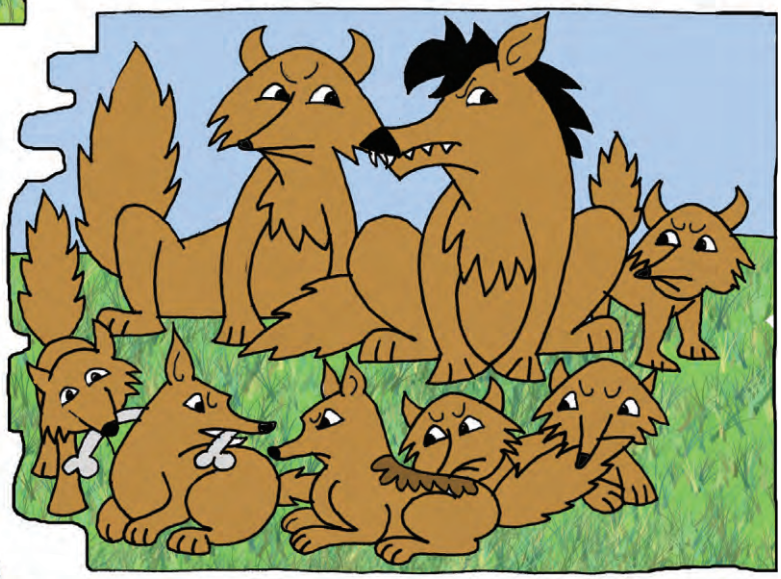

२. इसी जंगल में सियार का जोड़ा भी रहता था । उसके पाँच-छह बच्चे हमेशा आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे । घर पर दुख की परछाई थी ।

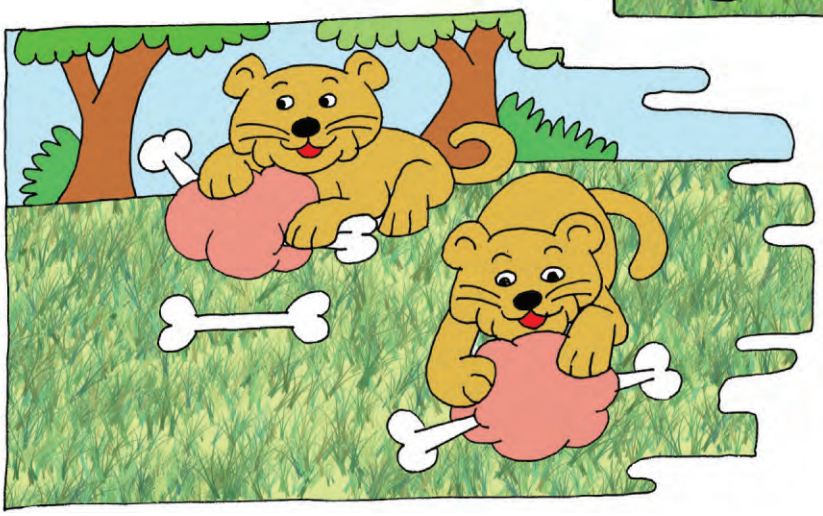

३. सिंह और सिंहनी द्‌वारा लाए हुए भोजन को शावक बड़े प्रेम से खा रहे थे । बहुत प्रसन्न थे ।

❑ विद्‌यार्थियों से पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । चित्रों का निरीक्षण कराएँ और उनसे पाठ में आए चित्रों पर चर्चा कराएँ ।

४. सियार और सियारिन अपने परिवार के लिए भोजन ले आए किंतु अधिक बच्चे होने के कारण वह उनके लिए पर्याप्त नहीं था । उनमें छीना–झपटी चल रही थी । छोटे कमजोर बच्चे रोते–बिलखते ही रह गए ।

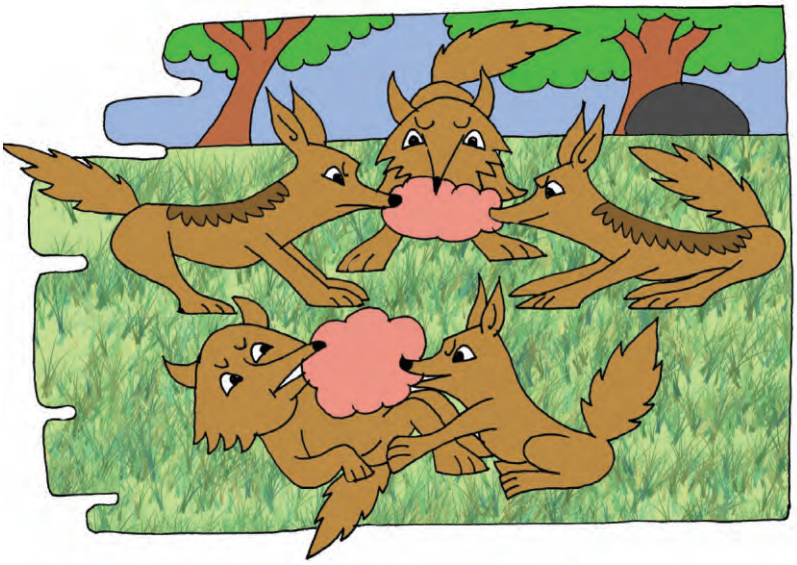

दूसरी पीढ़ी

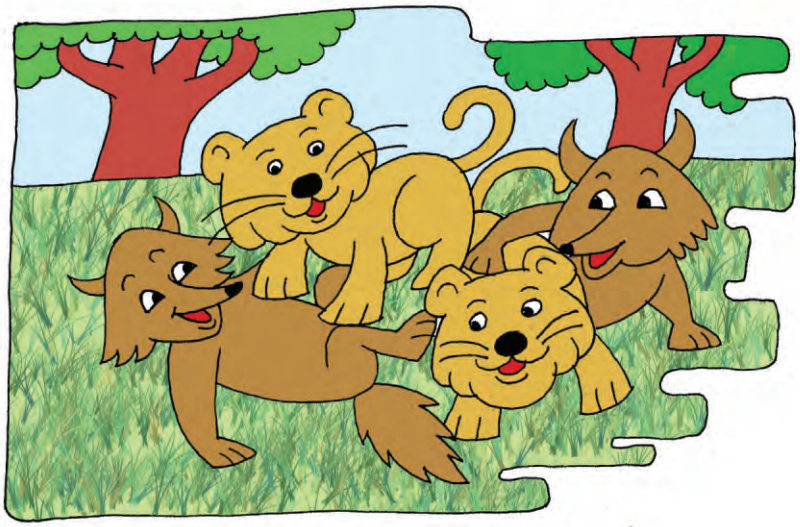

५. सिंहनी : देखो, मेरे परिवार में हम दो ही थे ।

सिंह : हमने भी दो ही छौनों को जन्म दिया है । देखो, सियार के बच्चों के साथ कैसे मजे से खेल रहे हैं ।

६. सियारिन : पहली पीढ़ी का परिवार बड़ा होने के कारण हमारे पूर्वजों को बहुत कष्ट उठाना पड़ा । हम तो अपने दो बच्चों का पालन–पोषण अच्छे ढंग से कर सकेंगे ।

सियार : सचमुच छोटे परिवार में हम बहुत खुश हैं । सिंह के परिवार से अब हमारा मेल–जोल बढ़ गया है ।

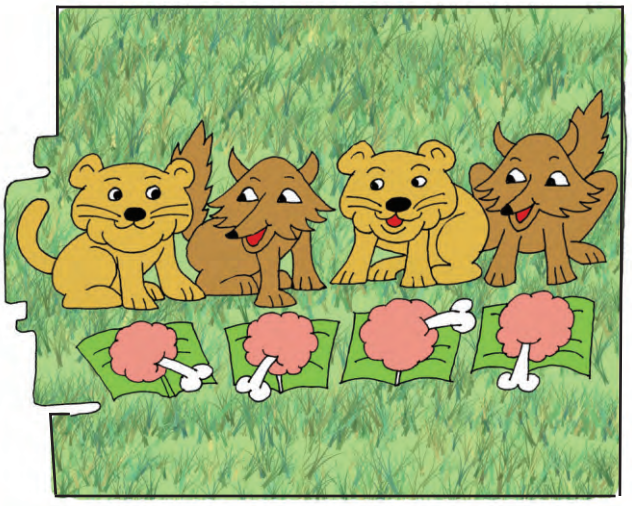

❑ दूसरी पीढ़ी में 'सियार–सियारिन के बच्चे क्यों सुखी थे ।' विद्यार्थियों से चर्चा करें । छोटे परिवार की आवश्यकता/महत्त्व समझाएँ ।

• व्यावहारिक सृजन – सांकेतिक चिह्न पढ़ो और समझो :

❑ विद्यार्थियों से चित्रवाचन करवाएँ । सांकेतिक चिह्नों की पहचान कराके उनके अर्थ, महत्त्व और आवश्यकता पर चर्चा करें । विद्यार्थियों को इसी प्रकार के अन्य चिह्नों के चित्र बनाकर उनके बारे में जानकारी बताने के लिए कहें ।

स्वाध्याय

१. द्वीपों के बारे में सुनो ।

२. किसी हवाई अड्डे की पढ़ी हुई जानकारी बताओ ।

३. सुवचन पढ़ो, समझो और संकलन करो :

(क) 'निगाहें रखो लक्ष्य पर, कठिन नहीं कोई सफर ।'

(ख) 'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले ।'

(ग) 'संत न छाँड़ई संतई, जे कोटिक मिले असंत ।'

(घ) 'राष्ट्र हमारी गौरव-गरिमा, राष्ट्र हमारी शान ।'

(ङ) 'कथनी-करनी एक समान, तभी मिले सभी से सम्मान ।'

४. उत्तर लिखो :

(च) चित्र में कौन-कौन-से धार्मिक स्थलों के सांकेतिक चिह्न आए हैं ?

(छ) सांकेतिक चिह्न में कितने प्रकार के मार्ग आए हैं ?

(ज) चित्र में यातायात के कौन-से सांकेतिक चिह्न आए हैं ?

(झ) हेलीकॉप्टर के उतरने के स्थान को क्या कहते हैं ?

(ञ) भालू और बंदर को पक्की सड़क से पेंग्विन के घर जाना है । बीच रास्ते में क्या-क्या पड़ेगा ?

५. चित्र पहचानो और उनसे संबंधित एक-एक वाक्य बताओ :

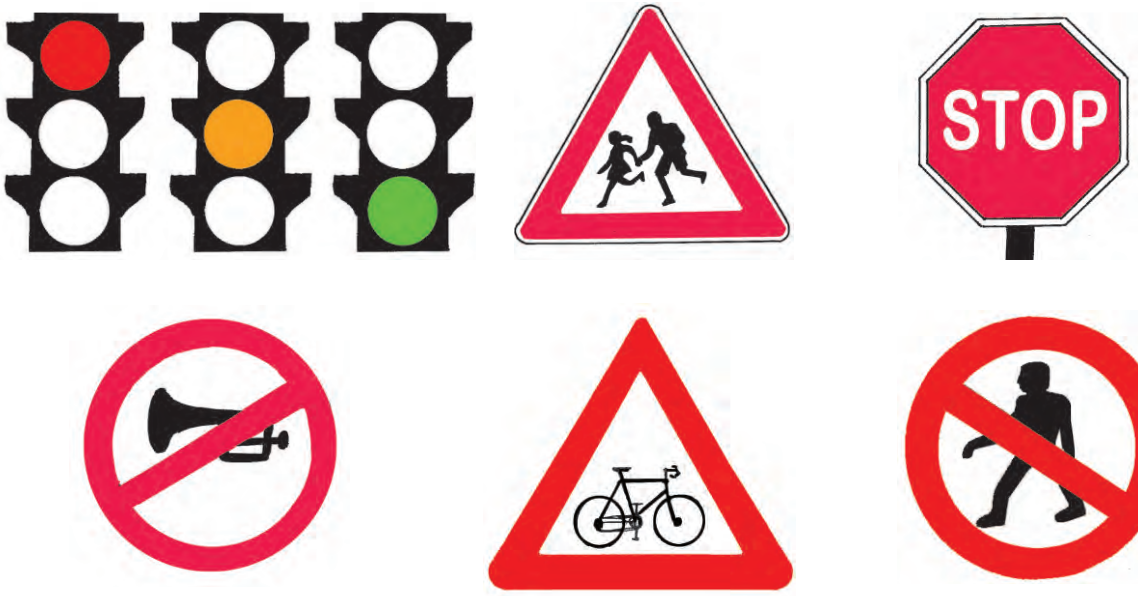

६. किसी दर्शनीय स्थल पर पर्यटकों ने अपने नाम लिखे हैं, तुम क्या करोगे, बताओ ।

* पुनरावर्तन *

१. सुनी हुई कोई एक जातक कथा सुनाओ ।
२. देखे हुए ऐतिहासिक स्थान के बारे में बताओ ।
३. खेती में हो रहे नये परीक्षणों की जानकारी पढ़ो ।
४. गणितीय आकारों और दिशाओं के दस-दस नाम लिखो ।
५. निम्नलिखित वर्ग पहेली में आड़े, खड़े, तिरछे पंचमाक्षरयुक्त बीस शब्द ढूँढ़कर उन्हें रेखांकित करो ।

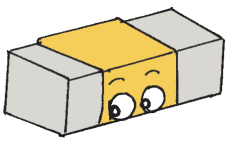

कं	धा	डं	ष	चं	टी
ठ	घा	तो	का	अं	दा
रं	सं	च	य	थ	बा
भा	खा	ज	पं	ढ	री
पं	गा	मं	य	छी	नं
प	झं	झा	गुं	फ	न

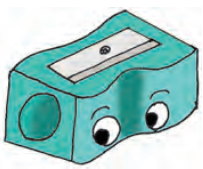

उपक्रम

माँ-पिता जी से सामाजिक प्रेरक-प्रसंगों के बारे में सुनो ।	सामाजिक प्रेरक-प्रसंगों से तुमने क्या-क्या सीखा, बताओ ।	अपने आस-पास लगे विज्ञापनों के शीर्षक पढ़ो ।	अब तक तुम कौन-कौन-से गाँव देख चुके हो; उनके नाम लिखो ।

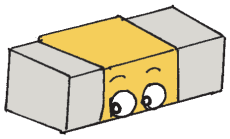

* शब्दार्थ *

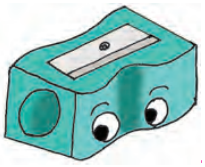

पहली इकाई

४. **जायकवाड़ी बाँध :** परियोजना= प्रकल्प, लंबे समय तक चलने वाली योजना ।

६. **चाँद और धरती :** तात= बेटा; गात= शरीर; मात= माता ।

दूसरी इकाई

२. **सीख :** निसदिन= रातदिन; आफत= संकट; पय= दूध ।

३. **घंटाकरण :** घसियारा= घास काटने वाला; चरवाहा= पशु चराने वाला ।

५. **पेटूराम :** थुलथुल= मोटा, स्थूल; मन मसोसकर= इच्छा दबाकर ।

६. **मिठाइयों का सम्मेलन :** चटोरी= जिसे व्यंजन खाने का अत्यधिक चाव हो; अनुपात= प्रमाण; क्षति= हानि; प्रथा= परंपरा, रीति-रिवाज ।

९. **मैं दीपक हूँ :** नक्काशी= पत्थर आदि पर खोदकर बेल-बूटे बनाने की कला; आलोकित= प्रकाशित; आविष्कार= खोज; सौर ऊर्जा= सूर्य की शक्ति ।

तीसरी इकाई

४. **स्वस्थ तन-स्वस्थ मन :** कुपोषित= जिसका पोषण ठीक न हुआ हो ।

६. **नई अंत्याक्षरी :**

अधजल गगरी छलकत जाए= थोड़ा-सा धन/ज्ञान/गुण होने पर बहुत इतराना ।

एक हाथ से ताली नहीं बजती= सफलता के लिए दोनों पक्षों को प्रयास करना पड़ता है ।

तिल का ताड़ बनाना= छोटी-सी बात को बढ़ा चढ़ाकर बताना ।

न घर का न घाट का= न इधर का न उधर का ।

नौ नगद न तेरह उधार= नगद दाम पर बेचना, उधार बेचने से अच्छा है ।

राई का पहाड़ बनाना= छोटी-सी बात को बढ़ा चढ़ाकर कहना ।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन= पुराना हमेशा उपयोगी होता है ।

नेकी कर कुएँ में डाल= फल की अपेक्षा न करते हुए दूसरे की सहायता करना ।

लातों के भूत बातों से नहीं मानते= दुष्ट को सज्जनता से नहीं समझाया जा सकता ।

तेल देखो, तेल की धार देखो= परिस्थिति अनुरूप व्यवहार करना ।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है= व्यक्ति अपने साथियों को देखकर पुराना मार्ग छोड़कर नया मार्ग अपनाता है ।

हाथ कंगन को आरसी क्या= प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं ।

यथा राजा तथा प्रजा= जैसा नेता होता है वैसी जनता होती है ।

जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय= जिसकी रक्षा ईश्वर करता है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

८. **नन्हीं जादूगरनी :** स्टेन्सिल= अक्षरों का एक तरह का साँचा ।

९. **सच्चा साथी नीम :** रैनबसेरा= रात में विश्राम करने का स्थान; राहगीर= यात्री; चौपाल= चारों ओर से खुली हुई बैठक, बैठने का छायादार स्थान ।

१०. **समुच्चित चित्रकला (कोलाज) :** कीर्तिमान= प्रतियोगिता में स्थापित सर्वोच्च मानदंड; देहावसान= मृत्यु; विगत= पिछला ।

चौथी इकाई

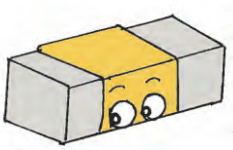

४. **बचत :** अपव्यय= अनावश्यक खर्च, फिजूलखर्च ।

९. **पृथ्वी :** अवनि= धरती; सौरमंडल= सूर्य और उसके चारों ओर घूमने वाले ग्रह; अनुसंधान= शोध; संकल्पना= ठोस विचार; जैव विविधता= विभिन्न प्रकार के जीव ।

१०. **छोटा परिवार :** शावक= प्राणी का बच्चा ।

❊ स्वाध्याय के उत्तर ❊

पहली इकाई

पाठ २, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.५ : पोशाकों के नाम ।

शेरवानी, चूड़ीदार, कुरता–पैजामा, सूट, साड़ी, पैंट–शर्ट ।

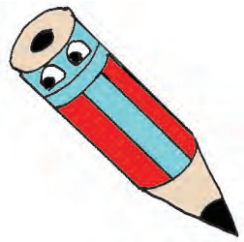

पाठ ३, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.७ : पक्षियों के नाम ।

बया, हंस, नीलकंठ, काकातुआ, पेंग्विन, सोहनचिड़िया ।

पाठ ४, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.९ : पुलों के सुझाए गए नाम ।

रस्सी पुल, लकड़ी पुल, समुद्री पुल, (सी–लिंक), उड़ान पुल, खंभारहित पुल (हावड़ा ब्रिज), झील पुल।

पाठ ९, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.१७ : प्राणियों के नाम ।

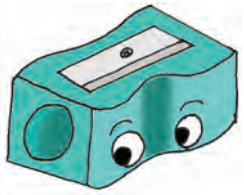

घोड़ा, भैंस, भेड़, एमू, गधा, खरगोश ।

पाठ १०, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.१९ : वाद्यों के नाम ।

डफली, डमरू, गिटार, ढोलक, वायलिन, वीणा ।

दूसरी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.२५ : चित्रों के नाम ।

पुलिस वैन, कचरा गाड़ी, फिरता पुस्तकालय, हेलिकॉप्टर, पानी टैंकर, फिरता अस्पताल ।

पाठ ३, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.२७ : अंधविश्वास ।

बिल्ली का रास्ता काटना, साँप काटने पर ओझा बुलाना, बाहर जाते समय किसी का छींकना, पीछे से टोकना, तीन तिगाड़ा, नींबू–मिरची लगाना ।

पाठ ४, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.२९ : जलशुद्धीकरण प्रक्रिया ।

फिटकरी घुमाना, छानना, पानी उबालना, औषधी डालना, शुद्धीकरण मशीन, निथारना ।

पाठ ९, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.३७ : दीपों के नाम ।

ढिबरी, लालटेन, सीएफएल बल्ब, मोमबत्ती, बल्ब, ट्यूब लाईट, दीपस्तंभ ।

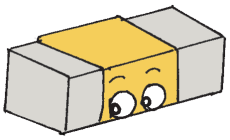

पाठ १०, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.३९ : विज्ञापन से संबंधित ।

दूध, पेन्सिल, टूथपेस्ट, कंपॉस, केशतेल, साबुन ।

तीसरी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.४५ : अंकुरित दलहनों के नाम ।

मूँग, लोबिया, चना, कुलथी, राजमा, मटर ।

पाठ ३, स्वाध्याय– ५, पृष्ठ क्र.४७ : व्यावहारिक गणितीय आकार ।

एक चौथाई, आधा, पौन, सव्वा, डेढ़, ढाई ।

पाठ ४, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.४९ : उपकरणों के नाम ।

चिपकपट्टी, सिरिंज, थर्मामीटर, आला (स्टेथोस्कोप), दस्ताने, प्रथमोपचार बक्सा ।

पाठ ९, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.५७ : चित्रों के नाम ।

हरी चाय, बेल, पुदीना, अजवाइन, ग्वारपाठा, तुलसी ।

पाठ ११, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.६१ : वाक्य ।

ऊँटगाड़ी, बैलगाड़ी, हाथी की सवारी, घोड़ागाड़ी, स्लेज, घोड़े की सवारी ।

चौथी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.६७ : त्योहारों–उत्सवों के नाम ।

दहीहंडी, दशहरा, गणेशोत्सव, ईद, गुढ़ीपाडवा, क्रिसमस ।

पाठ ३, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.६९ : खेलों के नाम ।

शतरंज, बैडमिंटन, कैरम, हॉकी, टेबलटेनिस, फुटबॉल ।

पाठ ४, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.७१ : तिलहनों के नाम ।

एरंडी, नारियल, मूँगफली, सरसों, सूरजमुखी, तील ।

पाठ ९, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.७९ : चित्रों के नाम ।

एअर मेल (हवाई डाक), अंतर्देशीयपत्र, पोस्टकार्ड, रजिस्ट्री, स्पीडपोस्ट (द्रुतगति डाक), पार्सल ।

पाठ ११, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र. ८३ : सांकेतिक चिह्न के नाम ।

ट्रैफिक सिग्नल, पाठशाला, रुको, शांतिक्षेत्र, रेडक्रॉस, पैदल चलने के लिए प्रतिबंध ।

पहली इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. २० का उत्तर :

फल – सेब, केला, अमरूद, अनार, अंगूर, आम, लीची, तरबूज, नारियल ।
फूल – शेवंतिका, गुलाब, चंपक, चमेली, गेंदा, हरसिंगार, जूही, बेला, जवाकुसुम, कमल ।
रंग – केसरिया, सफेद, नीला, काला, पीला, लाल, बैंगनी, जामुनी, कत्थई, हरा ।
साग–सब्जियाँ – सोआ, घमोया, मेथी, पालक, चौलाई, फूलगोभी, आलू, प्याज, टमाटर, बैंगन ।

दूसरी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ४० का उत्तर :

रसोई घर की वस्तुएँ – करछा, कड़ाही, चम्मच, गिलास, थाली, कटोरी, चकला, बेलन, तवा, छुरी, तसला ।
पंसारी दुकान की वस्तुएँ – गेहूँ, ज्वार, बाजरा, चावल, चनादाल, अरहर, हल्दी, लाल मिर्च, शक्कर, मकई ।
वृक्षों के नाम – नीम, पीपल, बरगद, गुलमोहर, सागौन, पलाश, इमली, बादाम, चंदन, अशोक ।
शरीर के अंगों के नाम – आँख, नाक, कान, हाथ, पैर, उँगलियाँ, घुटना, कुहनी, पीठ, पेट ।

पहली इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. २१ का उत्तर

१ क	म	ल		२ ध	३ न
म			४ प	व	न
५ र	६ क	७ म		८ ल	द
	९ स	न	न		
१० च	र	न		११ न	१२ त
१३ ल	त		१४ ज	ल	ज

दूसरी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ४१ का उत्तर

१ न	वी	२ न		३ छ	४ ल
नि		५ म	६ द		बा
७ हा	८ ट		९ बा	द	ल
१० ल	ह	११ रा	ना		ब
	१२ ला	ज		१३ नो	
१४ सो	ना		१५ ना	ट	क

तीसरी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ६२ का उत्तर :

मुहावरे – जी चुराना, गिड़गिड़ाना, मुँह में पानी आना, प्राणों की आहुति देना, जुटे रहना, राह देखना, ठहाका लगाना, दाँत दिखाना, आँखें दिखाना, आँखें मटकाना, रंग में रँग जाना, कहर ढाना, होश में आना, मात खाना, आँखें खोलना ।

तीसरी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ६३ का उत्तर

१. शक्ति
२. सख्त
३. अग्नि
४. विघ्न
५. अच्छा
६. अज्जू
७. टट्टू
८. गड्ढा
९. सत्य
१०. तथ्य
११. विद्या
१२. अध्याय
१३. गन्ना
१४. बप्पा
१५. गुफ्फार
१६. अब्बा
१७. सभ्य
१८. कुर्ता
१९. ध्यान

चौथी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ८४ का उत्तर

१. डंका
२. पंखा
३. पंगा
४. कंघा
५. संचय
६. पंछी
७. संजय
८. मंझा
९. अंटी
१०. कंठ
११. पंडा
१२. पंढरी
१३. संतोष
१४. पंथ
१५. चंदा
१६. कंधा
१७. पंप
१८. गुंफन
१९. अंबा
२०. रंभा
२१. झंझा